

इण्डियन थिऑसफिस्ट

नवम्बर 2025	खण्ड 123	अंक 11
-------------	----------	--------

विषयवस्तु

एक कदम आगे प्रदीप एच. गोहिल	5—6
आध्यात्मिक पूर्णता को अपनाना दीपा पाधी	7—12
जीवन के लिए शिक्षा सोनल मुरली	13—16
मेरी भावनात्मक यात्रा..... दीपक पांड्या	17—20
समाचार और टिप्पणियां	15—26

सम्पादक	प्रदीप एच गोहिल
अनुवादक	श्याम सिंह गौतम

थिऑसफिकल सोसायटी ऐसे शिक्षार्थियों से मिल कर बनी है जो संसार के किसी भी धर्म से संबंध रखते हैं या फिर संसार के किसी भी धर्म से सम्बन्ध नहीं रखते हैं, और जो सोसायटी के उद्देश्यों के अनुमोदन के कारण सोसायटी से जुड़े हुये हैं, धार्मिक विरोधों को दूर करने और अच्छी मानसिकता वाले लोगों को एकत्रित करते हैं जिनकी धार्मिक धारणा कुछ भी क्यों न हो, या जिनकी आकांक्षा धार्मिक सत्य को जानने, और अपने अध्ययन के परिणामों को दूसरों से साझा करना चाहते हैं। उनके एकत्व का बंधन कोई समान विश्वास का व्यवसाय नहीं है बल्कि समान खोज और सत्य तक पहुंचने की आकांक्षा है। वे मानते हैं कि सत्य को अध्ययन, मनन, जीवन की पवित्रता, उच्च आदर्शों के प्रति उनकी श्रद्धा, और जो सत्य को ऐसा पारितोषिक मानते हैं जिसके लिये प्रयास किया जाना चाहिये, न कि ऐसी रूढ़ि जो अधिकार से लागू की जाये। वे मानते हैं कि विश्वास व्यक्तिगत अध्ययन और स्फुरणा का परिणाम है न कि उससे सम्बन्धित किसी वस्तु से, और उसका आधार ज्ञान होना चाहिये न कि मान्यता। वे सभी के प्रति सहिष्णु होते हैं, यहां तक कि असहिष्णु के प्रति भी, किसी विशेषाधिकार के रूप में नहीं बल्कि कर्तव्य के रूप में और वे अज्ञान को मिटाना चाहते हैं, उन्हें दंड दे कर नहीं। वे सभी धर्मों को दैवी प्रज्ञान की अभिव्यक्ति के रूप में मानते हैं, और इनका तिरस्कार और धर्म परिवर्तन को नहीं उनके अध्ययन को वरीयता देते हैं। शांति के प्रति वे सतर्क हैं, जैसे सत्य उनका लक्ष्य है।

थिऑसफी ऐसे सत्त्यों का संग्रह है जो सभी धर्मों का आधार बनाती है, और कोई इस पर अपने व्यक्तिगत अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। यह ऐसा दर्शन प्रस्तुत करती है जो जीवन की समझ प्रदान करता है और जो न्याय और प्रेम को दर्शाता है, जो विकास का मार्गदर्शन करता है। यह मृत्यु को उसके उचित स्थान पर रखती है, जो अनन्त जीवन में पुनरावृत्ति करने वाली क्रिया है, और एक अधिक पूर्ण और अधिक प्रकाशमान अस्तित्व है, यह संसार में अध्यात्म-विज्ञान को पुनर्प्रतिष्ठित करती है, मनुष्य को शिक्षा देती है कि वह स्वयं आत्मा है और मन और शरीर उसके सेवक हैं। यह ग्रन्थों और धार्मिक सिद्धांतों के गूढ़ अर्थों को प्रकाशित करती है और इस प्रकार मेधापूर्वक उनकी पुष्टि करती है क्यों कि वे स्फुरणा की दृष्टि में सदैव उचित हैं।

थिऑसफिकल सोसायटी के सदस्य इन सत्त्यों का अध्ययन करते हैं और थिऑसफिस्ट उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो अध्ययन करना चाहता है, सहिष्णु होना चाहता है, जिसका लक्ष्य उच्च है और पूरी शक्ति से कार्य करना चाहता है, उसका सदस्य के रूप में स्वागत है, और उसका सच्चा थिऑसफिस्ट बन जाना उसी पर निर्भर करता है।

आगे का एक कदम

भगवद् गीता वह सुनहरा रास्ता है जो अपने पढ़ने वालों को कई तरह के योगिक सिस्टम दिखाता है जो उन्हें सबसे बड़े और सबसे बड़े आशीर्वाद का अनुभव करने में मदद करते हैं। इस रास्ते की जो बात साफ तौर पर ध्यान खींचती है, वह यह है कि यह जिंदगी के आध्यात्मिक और दुनियावी दोनों पहलुओं को बराबर अहमियत देता

साधक अक्सर शिकायत करते हैं कि जैसे ही वे ध्यान करने बैठते हैं, उनके मन में तरह-तरह के परेशान करने वाले विचार आने लगते हैं, जिससे बहुत अधिक ध्यान भटकता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि मन की इंद्रियों के सुख के बगीचे में भटकने की गहरी आदत होती है। स्वामी विवेकानंद इसे और साफ करते हुए बताते हैं कि चित्त मन का हिस्सा है और 'वृत्ति' और उसमें उठने वाली लहरें हमारा ब्रह्मांड हैं जिसमें अनगिनत चीजें हैं। हम झील का तल नहीं देख सकते क्योंकि उसकी सतह लहरों या छोटी लहरों से ढकी हुई है। झील के तल की झलक तब मिल सकती है जब लहरें शांत हो जाती हैं और पानी शांत हो जाता है। इस तरह, झील का तल हमारा अपना असली रूप है, झील चित्त है और लहरें, वृत्तियां हैं। भगवद् गीता के अध्याय 6 में, जो ध्यान योग के बारे में बताता है, भगवान कृष्ण हमें उस प्रोसेस के बारे में बताते हैं जिसके द्वारा साधक मन को कामुक सुखों से अलग करने और उसका ध्यान अंदर की ओर ले जाने की कोशिश करता है, जिससे वह शांत और निर्मल हो जाता है। गीता पर अपनी कमेंट्री में, भारत के पूर्व राष्ट्रपति, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन बताते हैं कि "मानव का मन आमतौर पर बाहर की ओर मुड़ा रहता है। योग अंदर की दुनिया को जानने की कोशिश करता है। हमें अपने मन को सभी कामुक इच्छाओं से दूर करना चाहिए, अपना ध्यान सभी बाहरी चीजों से हटाकर ध्यान की चीज में लगाना चाहिए।" भगवान कृष्ण ध्यान के लिए कुछ सुनहरे सिद्धांत बताते हैं। मेडिटेशन के दौरान शरीर में पैदा होने वाली शक्तिशाली स्फिरिचुअल करंट को बचाने की कोशिश करनी चाहिए। कुशा-घास से बनी प्रार्थना चटाई (आसन) इस्तेमाल करने की सलाह दी जाती है — जो बिजली का खराब कंडक्टर है। दूसरा, मेडिटेशन करते समय, साधक

को अपने शरीर, सिर और गर्दन को बिना इधर-उधर देखे मजबूती से सीधा और स्थिर रखना चाहिए। इससे रीढ़ की हड्डी से होकर जाने वाली सेंसरी नर्व ब्रांच से जीवन करंट के शांत बहाव में मदद मिलती है। तीसरा, भगवान कृष्ण कहते हैं कि साधक को अपने खाने और सोने की आदतों में बहुत संयम बरतना चाहिए। वे कहते हैं कि योग उस योगी के लिए सम्भव नहीं है जो बहुत अधिक खाता है, न ही उसके लिए जो बहुत अधिक सोता है, और न ही उसके लिए जो लगातार जागता रहता है। मांस, अंडे, अचार जैसी राजसिक खाने की चीजों से कठोरता से बचना चाहिए क्योंकि ये शारीरिक इच्छाओं को जन्म देती हैं। आखिर में वे ब्रह्मचर्य के पालन को बहुत महत्व देते हैं। जिस योगी ने शादी और सेक्सुअल रिलेशन से दूर रहने और मजबूत भावनाएं दिखाने या समाज में स्वीकार काम करने के लिए एनर्जी इस्तेमाल करने की कसम खाकर अपनी जिंदगी बचाई है, वह बिना किसी रुकावट के लंबे समय तक लगातार मेडिटेशन कर सकता है। पेट और ब्लैडर की हरकतों को कंट्रोल करने और खुद पर काबू रखने की योग्यता के बिना, योग के फील्ड में सफलता पाना सम्भव नहीं है। इसलिए, योग भगवान को पाने के बारे में नहीं है; यह मन को काबू में करने और उसका ध्यान अंदर की ओर, खुद की ओर लगाने के बारे में है। अधिक हम गीता (6.15) के एक श्लोक से अपनी बात खत्म कर सकते हैं जिसमें कहा गया है — "एक शांत मन वाला योगी, हमेशा खुद को इस तरह एक जैसा रखते हुए, शांति, सबसे बड़े निर्वाण को पाता है, जो मुझमें रहता है"। हर समय मन को शांत रखना निर्वाण पाने की तरफ एक आगे का कदम होगा।

स्फिरिचुअल होलनेस को अपनाना²

मैं एक ऐसी थीम शेयर करने जा रही हूँ जो पुरानी और मॉडर्न दोनों है,

वह है, 'स्फिरिचुअल होलनेस को अपनाना।'

एनी बेसेंट ने कहा था—

'इंसान की आत्मा अमर है और उसका भविष्य एक ऐसी चीज का भविष्य है

जिसकी ग्रोथ और शान की कोई सीमा नहीं है।—

असल में, यह उद्घरण हमारे अंदर की असीम क्षमता पर जोर देता है, जो स्फिरिचुअल होलनेस को बढ़ावा देने के लिए एकदम सही है।

ध्यान भटकाने वाली वस्तुओं, बंटवारे, भेदभाव से भरी इस शोरगुल वाले संसार में रहते हुए, इंसान बिखरा हुआ प्रतीत करता है। हम जिम्मेदारियों, उम्मीदों, महत्वाकांक्षाओं और तनाव से भी अनगिनत दिशाओं में खिंचे चले आते हैं। फिर भी, थिऑसफी समेत पुरानी ज्ञान परंपरा हमें याद दिलाती है कि होलनेस हमारी नैचुरल हालत है। यह कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे हासिल किया जाए, बल्कि यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में पता होना चाहिए। होलनेस जिंदगी के सभी पहलुओं — फिजिकल, मेंटल, इमोशनल, एथिकल, स्फिरिचुअल और सभी जीवों और चीजों के साथ जुड़ाव का इंटीग्रेशन है। इसके बाहर कुछ भी सोचा नहीं जा सकता। यह सब कुछ शामिल करने वाला है। होलनेस का एक सही एक्सप्रेसन ईस्टर्न फिलॉसॉफिकल लिटरेचर के ईशा उपनिषद में मिलता है, जिसमें कहा गया है— 'पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।' मतलब, कैपिटल 'ज' वाला 'शब्द' होल है और स्मॉल 'जे' वाला 'जीपे' भी होल है क्योंकि 'जीपे' 'जीज' होल से निकला है। 'जीपे' का मतलब है वह मैनिफेस्ट संसार जो 'जीज' के अलावा और कुछ नहीं है। होलनेस होलनेस के अलावा कुछ और नहीं बना सकती। होलनेस सिर्फ हिस्सों का जोड़ नहीं है, यह अनडिवाइडेड टोटैलिटी है। जैसा कि हम जानते हैं, यह फिजिकल संसार उस होल का मैनिफेस्टेशन

है। होलनेस से आगे कुछ भी नहीं है। होलनेस ही द्रुथ है और द्रुथ एक है। जैसा कि हम जानते हैं, थिऑसिफिकल सोसाइटी का मोटो है दृश्य 'द्रुथ से बड़ा कोई धर्म नहीं है'। धर्म कई हैं लेकिन सच एक ही है। इसका का यह मोटो खुद स्फिरिचुअल ईमानदारी और यूनिवर्सलिटी का बुलावा है दृश्य जो स्फिरिचुअल होलनेस का खास एलिमेंट है। स्फिरिचुअल होलनेस के अंदर से शुरू होती है। स्फिरिचुअल होलनेस को अपनाने का मतलब है यह पहचानना कि हम सिर्फ फिजिकल शरीर या पर्सनैलिटी नहीं हैं, हम आत्माएं हैं, हम एक जीवन की चिंगारी हैं। यह सच कोई ऐसी चीज नहीं है जो हमें अपने बाहर मिलती है। यह हमारे अंदर रहता है — हायर सेल्फ के रूप में। स्फिरिचुअल होलनेस किसी खास धर्म या परंपरा से बंधी नहीं है। इसे धार्मिक दायरे के अंदर या बाहर पाया जा सकता है। जैसा कि एलन वॉट्स कहते हैं, 'ईश्वर की अनंतता ईश्वर तक पहुंचने के अनगिनत रास्ते मुमकिन बनाती है।' स्फिरिचुअल होलनेस को अपनाने का मतलब है इंटीग्रेशन की यात्रा शुरू करना — अपनी बाहरी जिंदगी को उस गहरी, स्फिरिचुअल सच्चाई के साथ तालमेल में लाना जो हम सभी के अंदर रहती है। आगे बढ़ने से पहले, मैं वननेस और होलनेस के बीच सबसे छोटे अंतर के बारे में बताना चाहूंगी। वननेस का मतलब है सभी अस्तित्व की आवश्यक एकता। इसमें मिनरल, पौधे, जानवर, इंसान और यहाँ तक कि चेतना भी शामिल है। दूसरी ओर, होलनेस का मतलब है, होने के सभी पहलुओं का एक सामंजस्यपूर्ण पूरी चीज में मिलना। यह अपनी पहचान खोने के बजाय पूर्णता पर जोर देता है। खैर, हम कह सकते हैं — होलनेस वह एकता है जो रूप में दिखाई देती है, जबकि वननेस वह होलनेस है जो रूप से परे मौजूद है। वे दो अलग-अलग सच्चाई नहीं हैं, बल्कि एक ही अंदरूनी सच्चाई के दो नजरिए हैं।

अब स्फिरिचुअल होलनेस क्या है?

थिऑसफिकल नजरिए से, इंसान सिर्फ एक फिजिकल शरीर या पर्सनल ईगो नहीं है। हम सात गुना जीव हैं जिसमें कॉन्शसनेस की लेयर्स हैं — फिजिकल, एस्ट्रल, वाइटल और इमोशनल से लेकर हायर मेंटल, स्फिरिचुअल और डिवाइन तक। स्फिरिचुअल होलनेस इन हिस्सों का अलाइनमेंट है — जब हमारे विचार, फीलिंग्स, काम और इरादे हायर सेल्फ की रोशनी को रिफ्लेक्ट करते हैं। यह अंदरूनी एकता का खुलना है — हमारे अंदर और बड़ी होल का।

1. दीपा पाधी, अंतरराष्ट्रीय उपाध्याक्ष टीएस

2. एक लघु वार्ता जिसे 12वीं अंतरराष्ट्रीय कान्फरेंस में 25 जुलाई को वेंकुअर में प्रस्तुत किया गया।

थिऑसोफी में, इवोल्यूशन का रास्ता सिर्फ बाहर की ओर ही नहीं बल्कि अंदर की ओर भी है। हम यहाँ सिर्फ मौजूद रहने के लिए नहीं हैं, बल्कि होश में इवॉल्व होने के लिए हैं — अंदर की लौ, डिवाइन स्पार्क को जगाने के लिए। जैसा कि भूट्ट कहा करते थे—

“मैटर का सेल्फ और स्पिरिट का सेल्फ सिर्फ कॉन्शियस लिविंग की प्रैक्टिस से ही एक हो सकते हैं।” (द वॉइस ऑफ द साइलेंस से लिया गया)

हमें खुद से पूछना होगा, क्या मैं इस सच्चाई के साथ जी रहा हूँ कि मैं कौन हूँ? किन्तु क्या मेरे काम दया, समझदारी और एकता दिखाते हैं? यह स्पिरिचुअल रास्ते का डिस्प्लिन है— अलग सेल्फ के लिए नहीं बल्कि ग्रेट गुड, वन लाइफ के लिए जीना।

स्पिरिचुअल होलनेस अंदरूनी तालमेल की गहरी भावना से जुड़ी है। इसमें एक ऐसी भावना शामिल है जो हमारी अंदरूनी सच्चाई, नैतिक मूल्यों और अन्तिम उद्देश्य के साथ जुड़ी हुई है। इसमें यूनिवर्स के साथ एक कनेक्शन या कॉस्मिक यूनिटी की भावना शामिल है जो किसी डॉक्ट्रिन या लॉज से जुड़ी नहीं हो सकती है। हम कह सकते हैं, यह अंदरूनी अलाइनमेंट और कनेक्टेडनेस के बारे में है।

जो धार्मिक सीमाओं से परे है। हम सभी यूनिवर्स, जीवन और अंदरूनी सेल्फ या कॉन्शसनेस से जुड़े हुए हैं। यह कॉन्शसनेस मेरे अंदर और मेरे बाहर है। स्पिरिचुअल होलनेस सभी धर्मों से परे है। दूसरी ओर, धार्मिक होलनेस एक ऐसी भावना को बताती है जो किसी खास धर्म के अपने विश्वासों, रीति-रिवाजों और समुदाय के साथ तालमेल बिठाकर जीने का। यह किसी खास परंपरा या सामुदायिक विश्वास के साथ तालमेल बिठाकर जीने के बारे में है। थियोसोफी न सिर्फ यूनिवर्सल ब्रदरहुड में विश्वास करती है, बल्कि यह सभी जीवित और निर्जीव प्राणियों के आपस में जुड़े होने पर भी जोर देती है क्योंकि हम सभी एक कॉस्मिक वेब के हिस्से हैं। थिऑसिफिकल शिक्षा का एक मुख्य हिस्सा यह है कि — सारा जीवन एक है हमारे और दूसरों के बीच, इंसान और भगवान के बीच, यहां तक कि आत्मा और पदार्थ के बीच भी कोई असली अलगाव नहीं है। ब्लैवैट्स्की हमें याद दिलाते हैं— “प्रकृति का पूरा क्रम एक बेहतर जीवन की ओर एक प्रगतिशील मार्च दिखाता है।” (द सीक्रेट डॉक्ट्रिन, खण्ड.1, 2—277) महान संत रूमी ने सही कहा था— ‘तुम सागर में एक बूंद

नहीं हो, तुम एक बूंद में पूरा सागर हो।’ सागर में हर बूंद अपनी अलग पहचान रखती है, सागर में मिल जाती है — विविधता के पीछे छिपी एकता। अपने आपस में जुड़े हुए स्वभाव को अपनाकर, हम उस अंदरूनी बंधन को मानते हैं जो सभी जीवित और निर्जीव प्राणियों को जोड़ता है। मैं कुछ थिऑसिफिकल प्रैक्टिस के बारे में बताना चाहूँगा जो उन लोगों के लिए जरूरी हैं जो आध्यात्मिक पूर्णता को अपनाने पर ध्यान दे रहे हैं— 1. खुद को जानना ही नींव है। मेडिटेशन, पढ़ाई और बिना स्वार्थ के सेवा के जरिए, हमें अपने झूठे स्व, यानी पर्सनैलिटी या ईगो को पहचानना होगा और असली स्व (आत्मा) से जुड़ना होगा। 2. अपने मकसद और मतलब के साथ तालमेल बिठाना जरूरी है। दिमागी तौर पर अपने हमें कामों को मकसद के साथ जोड़ते हुए जागते रहना चाहिए। 3. स्वीकार करना बहुत जरूरी है। जन्म—मृत्यु, सुख, दुख, ज्ञान—अज्ञान, परफेक्शन—अपूर्णता जैसे सभी दोहरेपन को स्वीकार करना, क्योंकि पूर्णता में ये सभी शामिल हैं। आध्यात्मिक पूर्णता अक्सर मुश्किलों के बावजूद शांति और संतुलन का एहसास कराती है। इसका मतलब यह नहीं है कि हमें दर्द महसूस नहीं होता या हम समस्याओं का सामना नहीं करते, बल्कि हमें स्वीकार करने की गहरी भावना महसूस होती है। 4. इंटीग्रेशन — होलनेस तब महसूस होती है जब हम अपने निचले साधनों — हमारे विचारों, भावनाओं और इच्छाओं, विश्वासों, कामों और

व्यवहार को शुद्ध करते हैं। इनका एक—दूसरे के साथ एक जैसा होना जरूरी है।

5. जुड़ाव की भावना सिर्फ दया और प्यार।

स्पिरिचुअल होलनेस अक्सर दूसरों के लिए दया, प्यार और हमदर्दी से पहचानी जाती है और सभी जीवों की इज्जत और कीमत को पहचानना, चाहे वे कितने भी छोटे क्यों न हों। सेवा स्पिरिचुअल एहसास का नैचुरल एक्सप्रेशन है। जैसा कि मैडम ब्लैवैट्स्की कहती हैं, “जो अपने लिए जीता है, वह बेकार जीता है; जो दूसरों की सेवा करने के लिए जीता है, वह सच में जीता है।” (द वॉइस ऑफ द साइलेंस)

6. मेडिटेशन जरूरी है। शांति में, आत्मा की आवाज सुनी जाती है। मेडिटेशन की प्रैक्टिस हमारी चेतना को एस्ट्रल से ऊपर उठाकर बुद्धि या स्पिरिचुअल लेवल के संपर्क में लाती है।

7. इंसान को नेचर के साथ तालमेल बिठाकर रहना चाहिए। नेचर के नियमों का सम्मान करके और सादगी से रहकर, हम यूनिवर्स के स्पिरिचुअल नियमों के साथ जुड़ते हैं। थियोसोफी स्पिरिचुअल होलनेस के विचार पर आधारित है। यह सिखाती है कि सभी इंसान अपने दिव्य, एक और पूरे नेचर को पाने की राह पर हैं। मुख्य चिंता सभी जीवन की एकता, आत्मा का स्पिरिचुअल विकास और सभी के लिए उपलब्ध अंदरूनी ज्ञान है। मैं जो समझती हूँ, स्पिरिचुअल होलनेस का मतलब है अपने अंदर के इंसान या चेतना के साथ पूरी तरह से जुड़ा होना, एक होना और शांति में रहना, साथ ही पूरे यूनिवर्स से जुड़ना। इसमें सभी जीवों और ब्रह्मांड के साथ अपनी एकता का अनुभव करना शामिल है। थियोसोफी में, होलनेस का मतलब है अपने होने के सात सिद्धांतों को अपने ऊँचे स्वभाव और दुनिया की भलाई के लिए एक साथ लाना। एक इंसान तब “होल” होता है जब ये परतें एक साथ हों, बैलेंस हों और एक साथ काम करें। खुद को बदलना ही स्पिरिचुअल होलनेस का रास्ता है। आजकल लोग, खासकर युवा पीढ़ी, किसी खास धर्म से अपनी पहचान बनाना पसंद नहीं करते। इसका मतलब यह नहीं है कि आस्था खत्म हो रही है, बल्कि इसे नया रूप दिया जा रहा है। साइंस और स्पिरिचुअलिटी एक साथ आ रहे हैं। न्यूरोसाइंस और चेतना की स्टडीज स्पिरिचुअल अनुभवों की हमारी समझ को एक नया रूप दे रही हैं, और मन, शरीर और यूनिवर्स के बीच कनेक्शन को मजबूत कर रही हैं। असल में, हाल ही में एक नया साइंस डेवलप हो रहा है जो होलनेस पर आधारित लगता है। लॉरा डोमेनेक कहती हैं—

“होलनेस यूनिवर्स की शुरुआत को एक शुरुआती पॉइंट के तौर पर नहीं बताती, जहाँ से वह निकलता है, बल्कि एक लगातार चलने वाली, एक्टिव प्रोसेस के तौर पर बताती है। यह हमें यूनिवर्स को एक तेजी से आगे बढ़ते हुए, एक गहराई से जुड़े हुए, रिलेशनल और एक जैसी हालत के तौर पर देखने के लिए बुलाती है, जहाँ अलग-अलग तरह के लोग पूरे यूनिवर्स को तोड़ते नहीं हैं, बल्कि उसे बेहतर बनाते हैं। इसके हिस्से यूनिक, अलग और ऐसे हैं जिन्हें दोहराया नहीं जा सकता, फिर भी वे अलग नहीं किए जा सकते और अपने आप पूरे यूनिवर्स से जुड़े रहते हैं। “होलनेस यूनिवर्स का अंदरूनी नेचर है। इसलिए, होलनेस की ओर यात्रा सिर्फ एक स्पिरिचुअल खोज ही नहीं है, बल्कि यह एक साइंटिफिक खोज भी है। स्पिरिचुअल होलनेस हमें न सिर्फ अपने अंदर शांति और खुशी पाने के लिए काम करने के लिए बुलाती है, बल्कि उस

शांति और खुशी को दुनिया में लाने के लिए भी बुलाती है।

जब हम स्पिरिचुअली होलनेस महसूस करते हैं, तो हम अपने आप अधिक प्यार करने वाले, दयालु, सब्र रखने वाले, सच्चे, हमदर्द और दयालु बन जाते हैं। हम दूसरों को, यहाँ तक कि जो इंसान नहीं हैं, उन्हें भी अजनबी नहीं, बल्कि साथी यात्री के तौर पर देखना शुरू कर देते हैं, जिनमें से हर कोई अपने साथ कुछ लेकर चलता है। अपने अंदर की रोशनी।

आध्यात्मिक पूर्णता को अपनाने का मतलब जिंदगी से भागना नहीं है, बल्कि इसे जागरूकता के साथ और पूरी तरह से जीना है। इसका मतलब है यह याद रखना कि हम दूसरों से और अपने आस-पास की दुनिया से अलग नहीं हैं। इसका मतलब है यह पहचानना कि हर हिस्से में वह संपूर्णता है जो यूनिवर्सल कॉन्शसनेस है, एक पवित्र एकता।

थियोसोफी हमें याद दिलाती है कि संपूर्णता की यात्रा एक जीवनकाल तक सीमित नहीं है। हमारा आध्यात्मिक विकास कई जीवनकालों में, कर्म और पुनर्जन्म के नियम के जरिए होता है। हम कई अवतारों में धीरे-धीरे ज्ञान, प्रेम और करुणा को विकसित करते हुए विकसित हो रहे हैं।

जैसा कि कहा जाता है, हर आत्मा की अपनी लय होती है। इसलिए, आध्यात्मिक पूर्णता को अपनाने का मतलब है किसी चीज को खुलेपन के साथ पूरी तरह से स्वीकार करना और अपने असली स्व — हायर सेल्फ से जुड़ना। यह अंदर से पूरा महसूस करने के बारे में है — मैं जो अंदर हूँ उसका कोई भी हिस्सा मिस न करना। असल में, मेरे अंदर का असली ‘मैं’ ही संपूर्ण है। “अंदर देखो, तुम बुद्ध हो”। द वॉइस ऑफ द साइलेंस कहती है।

जिंदगी के लिए शिक्षा⁴

अगर हम इस बारे में सोचें कि सबसे जरूरी क्या है, हमें सबसे ज्यादा क्या पसंद है, और क्या हमें सुकून देता है, तो जवाब यूनिवर्सल हैं।

जिंदगी मुख्य रूप से अच्छा बनने, खुश रहने, दूसरों की सेवा करने और मन की शांति पाने के बारे में है। क्या सच्ची शिक्षा हमें जिंदगी में आग बढ़ने में मदद कर सकती है और हमें इस अंदरूनी संतुलन की स्थिति, दूसरों से जुड़ाव महसूस करने और दिल में कोई बुरी भावना न रखने की दिशा में गाइड कर सकती है?

दूसरा सवाल यह है कि स्टूडेंट्स हर लेवल पर सभी चीजों के आपस में जुड़े होने को कैसे समझ सकते हैं? सिर्फ एक विचार या थ्योरी के तौर पर नहीं, बल्कि सच में यह पहचान कर कि उनके काम, शब्द और भावनाएँ उनके आस-पास की हर चीज पर कैसे असर डालती हैं। और एक बार जब वे इस आपस में जुड़े होने को समझ लेते हैं, तो यह उन्हें कैसे बदल देता है। यही बदलाव लाने वाली शिक्षा का सार है।

उपनिषदों में, इस सच्ची शिक्षा को परा-विद्या कहा गया है

परम ज्ञान, वह ज्ञान जो आजाद करता है — खुद की खोज और खुद को महसूस करना। हम खुद को कैसे खोजें, खुद के बारे में कैसे जागरूक हों, अपने अंदर की प्रकृति को धुंधला करने वाली सभी परतों को कैसे हटाएं, और क्या हम अपने असली रूप के करीब जाने के लिए धीरे-धीरे कदम उठा सकते हैं? इस आपसी जुड़ाव के हिस्से के तौर पर, आइए भावनाओं की जांच करें। हमारी भावनाएं न केवल हमें बल्कि हमारे आस-पास के लोगों को भी प्रभावित करती हैं। हम भावनाओं के जाल में उलझे रहते हैं। नेगेटिव भावनाएं हमें प्रभावित करती हैं, हमें अलग-थलग और अकेला करती हैं, और हमारे अंदर और आस-पास के लोगों में दूसरी नेगेटिव भावनाओं को ट्रिगर करती हैं। उदाहरण के लिए, गुस्सा, नफरत, डर, अकेलापन, और भी बहुत कुछ बढ़ाता है। इसके विपरीत, पॉजिटिव भावनाएं सबको शामिल करने वाली, एकजुट करने वाली और फैलने वाली होती हैं, जैसे खुशी, आभार, प्यार, दया, और

दूसरी 'भावनाओं का जाल' एक्टिविटी के जरिए, जहां भावनाओं को इंसान बनाया जाता है और एक धागे का इस्तेमाल करके एक जाल बनाया जाता है, विद्यार्थी खुद देख सकते हैं कि यह आपसी जुड़ाव ऑर्गेनिक है। हम सब एक बड़े, जिंदा, ऑर्गेनिक पूरे का हिस्सा हैं जिसमें हर चीज एक-दूसरे पर असर डालती है। हमारे विचारों, भावनाओं, कामों और शब्दों के मिलते-जुलते नतीजे होते हैं। इससे स्टूडेंट्स को एक अलग नजरिया में मिलता है। वे अलग-अलग एंगल से एक-दूसरे से जुड़े होने को समझते हैं — जीवन का जाल एक साइंटिफिक फैक्ट के तौर पर, एक सोशल साइंस कॉन्सेप्ट के तौर पर, और भी बहुत कुछ अज्घार थिऑसिफिकल एकेडमी में, हमारा दिन सुबह की असेंबली से शुरू होता है जहाँ हर कोई गोल घेरे में बैठता है, और सारा ध्यान सेंटर पर फोकस करता है — एनर्जी और ध्यान का मिलना। हम एक साथ मंत्र पढ़ते और गाते हैं, फिर चुपचाप बैठते हैं, उस एनर्जी को अपनी क्लास में ले जाते हैं। स्कूल का दिन एक सोचने-समझने की प्रैक्टिस के साथ खत्म होता है, जिससे स्टूडेंट्स दिन और खुद के बारे में सोच-विचार कर पाते हैं। साल में एक या दो बार, हम गहरी सोचने-समझने की प्रैक्टिस करते हैं। हम सभी के अंदर एक अंदरूनी कंपास होता है, एक गाइड करने वाला सिस्टम जो हमें रास्ता दिखाता है। चुनौती यह है कि इस कम्पास से और गहराई से जुड़ना सीखें ताकि हमारे काम, शब्द और इच्छा ऊपरी लेवल से, हमारे काम-मनस स्वभाव, आदतों, पहले से बनी सोच और खुद पर ध्यान देने से न शुरू हों। इस सोच में अपने अंदर एक छोटी सी जगह को पहचानना शामिल है जिसे हम मुश्किल पाते हैं, और फिर सात दिन की रिप्लेक्शन ट्रैकर शीट का इस्तेमाल करके उसे लगभग एक हफ्ते तक बिना किसी जजमेंट के मॉनिटर करना, बस देखना और जागरूक होना। यह चुनौती के प्रति सचेत रहने में हमारी मदद करने का एक आसान तरीका है। इस प्रैक्टिस में एक 'सर्किल ऑफ विजडम' भी शामिल है — छोटे ग्रुप जहाँ हिस्सा लेने वाले अपनी पर्सनल आदतें शेयर करते हैं जिन्हें वे बदलना या डेवलप करना चाहते हैं, या वे चुनौतियाँ जिन्हें वे सुलझाना चाहते हैं, और दूसरे लोग इस सफर में उनकी मदद करने के लिए टिप्स या सुझाव देते हैं। हमें एजुकेशन सिस्टम को नई नजर से देखने की जरूरत है। स्कूल जिंदगी के बारे में सीखने के लिए कोई नकली जगह नहीं है। स्कूल खुद जिंदगी है इसलिए, हम स्टूडेंट को जो अनुभव देते हैं, वे असली होने चाहिए। सिस्टम में बहुत अधिक आजादी होनी चाहिए। हर बीज के अंदर जीवन शक्ति धड़क रही है। हमारा काम है नमी, गर्मी

1. थिऑसफिकल सोसाइटी इण्डियन सेक्शन की राष्ट्रीय वक्ता।

2. एक लघु वार्ता जिसे 12वीं अंतरराष्ट्रीय कान्फरेंस में 25 जुलाई को वैंकुअर में प्रस्तुत किया गया।

और पोषक तत्व देना। पौधों को उनके बचपन में बचाना और कमजोर स्टेज पर उन्हें खुद की जिम्मेदारी लेने के लिए मजबूत बनाना।

ऐसे पल जब हम कुछ खास खोज सकते हैं।

एजुकेशन सिस्टम में मौजूदा स्टैंडर्डिजेशन, जो साइंस के बारे में एक रिडक्शनिस्ट नजरिए से चलता है, सीखने की प्रक्रिया की ऑटोनॉमी को कम करता है और बच्चे के अंदर के इंसान को दबाता है। इस तरीके से, बच्चे उन लोगों के लिमिटेड वर्शन में डेवलप होते हैं जो वे बन सकते थे।

हमें ऑटोनॉमस लर्निंग फ्रेमवर्क बनाने और एक पार्टिसिपेटरी माहौल बनाने की जरूरत है एक ऐसा फ्रेमवर्क जो रिश्तों पर आधारित माहौल में सेल्फ-डायरेक्टेड, एक्सपीरिएंशियल लर्निंग को बढ़ावा दे।

जिंदगी हर पल के साथ आगे बढ़ती है। अपने आस-पास की दुनिया को एक्सप्लोर करना और खोजना चाहे वह लोग हों, जानवर हों, पौधे हों, या कीड़े हों। उस खुशी में हिस्सा लेना और अपने आस-पास की चीजों को देखकर हैरानी और हैरानी महसूस करना ही असली लर्निंग है। दुनिया सबजेक्ट्स में बंटी नहीं है। जिंदगी में कोई बँटवारा नहीं होता। इसलिए, हमें सबजेक्ट्स को जितना हो सके उतना इंटीग्रेटेड बनाने की जरूरत है।

आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत क्या है जब खुद का फायदा हावी हो रहा है? एक पुरानी कहावत इसे बहुत आसान तरीके से कहती है—

‘जब आखिरी पेड़ मर जाएगा, आखिरी नदी जहरीली हो जाएगी, और जब आखिरी मछली पकड़ी जाएगी, तभी हमें एहसास होगा कि हम पैसा नहीं खा सकते।’

हम एक ‘टेकर कल्चर’ के बीच रह रहे हैं। हम ओनरशिप, कॉपीराइट और पेटेंट की दुनिया में रहते हैं। ‘गिवर कल्चर’ को जड़ जमाने की जरूरत है। ‘ग्रेटिट्यूड’ की प्रैक्टिस को और ज्यादा दिखना और मतलब वाला होना चाहिए।

खुद को जानने, सोचने, हैरान और खोज करने, एक गिवर कल्चर को बढ़ावा देने के इस सिखाने-सीखने के प्रोसेस में, टीचर एक को-लर्नर है। हम सब इस सफर में साथ हैं। यह एक जादुई पल होता है

जब टीचर, सिखाया जाने वाला और सीखा जाने वाला पूरी तरह से एक साथ मिल जाते हैं। जैसा कि उपनिषद की प्रार्थना में कहा गया है ‘सहनाववतु, सहनौ भुनक्तु’ सभी का मन एक होना चाहिए,

कोई ध्यान भटकाने वाली चीज नहीं होनी चाहिए — अंदर की भी और बाहर की भी। हम हमेशा कुछ खास ढूँढते रहते हैं, लेकिन वह आम में होता है।

अगर हम नेचर को देखें, तो किसी भी चीज का कोई पर्सनल एजेंडा नहीं होता।

सिर्फ एक यूनिवर्सल एजेंडा होता है जिसमें सभी पर्सनल एजेंडा फिट हो जाते हैं। हर जीवन—रूप मिलकर काम करता है, संतुलन और तालमेल बनाए रखता है

जो अस्तित्व का आधार है। सिर्फ इंसान ही हैं जिनके पास मन की क्षमता से पैदा होने वाली अलग होने की गहरी भावना के साथ एक पर्सनल एजेंडा होता है। और यही बात अस्तित्व की खासियत को आम बनाती है।

एच.पी.बी. ने कहा था कि ‘थियोसॉफी का सार इंसान में मौजूद ईश्वर और वह है इंसान के बीच पूरी तरह तालमेल बिठाना है’

शिक्षा का असली काम यह पक्का करना है कि निचली प्रकृति की पकड़ ढीली हो। वह कहती हैं, ‘दया, हर तरह की बुरी भावना या स्वार्थ की कमी, दान, सभी प्राणियों के प्रति अच्छा व्यवहार इस तालमेल के मुख्य गुण हैं। इसका नतीजा जरूर थियोसॉफिकल सेवा होता है, जो अंदरूनी और बाहरी कामों से बनी होती है। यह अंदरूनी तालमेल और एडजस्टमेंट ही है जो परोपकार में हमारे स्वभाव को पूरी तरह से जाहिर होने देगा।’ एच.पी.बी. ने कहा ‘मन तुम्हारा मन या मेरा मन नहीं है’।

गंदा मन पूरी दुनिया में काम कर रहा है — तुम्हारे मन में, मेरे मन में, सबके मन में। देखो कि वह गंदा मन, जो अहंकारी मन है, कैसे काम करता है। गंदा मन पूरी दुनिया में काम कर रहा है — तुम्हारे मन में, मेरे मन में, सबके मन में। देखो कि वह गंदा मन, जो अहंकारी मन है, कैसे काम करता है। अगर हम देखते हैं कि समस्या हमारे अंदर है, तो हम खुद को उससे आजाद कर सकते हैं। तो यह हमारी लगातार कोशिश होनी चाहिए, अगर हमें अच्छाई, शांति, सुकून और जिंदगी में जो कुछ भी अच्छा है, उसे लाना है।

राधा बर्नियर

‘ऑन द वॉच टावर’

मेरी भावनात्मक यात्रा...

थियोसोफिकल सोसाइटी का हृदय केवल एक संविधान या एक संगठन के रूप में गतिविधियों की योजना नहीं है, बल्कि यह महान आत्माओं की अनुभूति से प्रकट ऊर्जा और दृष्टि है। यह दृष्टि विभिन्न पुस्तकों, पुस्तिकाओं, लेखों और भाषणों में व्यक्त की गई है। लेकिन यह सब केवल सूचना या ज्ञान के रूप में ही रहता है जब तक कि इसे जीवन में न उतारा जाए, जब तक कि इसे एक अनुभव के रूप में न जिया जाए।

यहाँ एक बड़ा भ्रम पैदा होता है — जानने का अर्थ अनुभव करना नहीं है। सत्य कभी केवल पुस्तकों तक ही सीमित नहीं होता। पुस्तकें एक मार्गदर्शक, एक मार्गदर्शक हो सकती हैं, लेकिन उस मार्ग पर चलने का प्रयास प्रत्येक सदस्य की सचेत जिम्मेदारी है। यदि यह चिंतन जीवन में प्रबल न हो, तो वह ज्ञान केवल एक प्रकार का शून्यता ही उत्पन्न करता है। इसलिए, थियोसोफिकल सोसाइटी के सदस्यों के लिए सच्ची आचार संहिता यही है कि वे निरंतर ईमानदार और सच्चे प्रयासों के माध्यम से अपने जीवन को सत्य की प्राप्ति की ओर ले जाएँ।

किसी भी संगठन के हृदय तक पहुँचने के लिए, विचार के दो स्तरों पर विचार किया जा सकता है:

- 1) उसकी संरचनात्मक व्यवस्था — जो नियमों और विनियमों के माध्यम से प्रवाह को नियंत्रित करती है।
- 2) उसका आंतरिक प्रकाश — जो मूल स्वर, प्रेरक तत्व और जीवंत हृदय है।

सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए, हमें एक और पहलू पर ध्यान केंद्रित करना होगा। महापुरुषों द्वारा दिखाए गए मार्ग का अनुसरण करना आवश्यक है। गति के बिना प्रगति असंभव है। और यह कभी भी लक्ष्यहीन नहीं हो सकती। थियोसोफिकल सोसाइटी का लक्ष्य एक गहन आंतरिक परिवर्तन है — जो सभी को अपने भीतर के सत्य को जीने के लिए प्रेरित करता है।

थियोसोफिकल विचार में वैज्ञानिकता शब्द का बहुत महत्व है। लेकिन यह वैज्ञानिकता बाहरी उपकरणों या प्रयोगशालाओं की उपलब्धता के कारण नहीं है, यह आंतरिक अनुभव और तर्क के अनुसार प्रकट होती है। किसी भी पुस्तक में जो लिखा है वह अंतिम सत्य नहीं हो सकता। क्योंकि शब्द सीमित हैं, जबकि विचार असीमित है। पढ़ने की प्रक्रिया हमें ज्ञान की ओर ले जाती है, लेकिन विचार और अनुभव हमें ज्ञान की सीमाओं से परे आत्मा की ओर ले जाते

हैं। इसलिए, सदस्यों के लिए थियोसोफिकल दृष्टिकोण के साथ एकाकार होना महत्वपूर्ण है। केवल जानना नहीं, बल्कि जीना ही सच्ची प्रगति है।

इस समय द सीक्रेट डॉक्ट्रिन का वाचन चल रहा है। यह पुस्तक एक दर्पण है — यह हमें हमारे अज्ञात स्वरूप का दर्शन कराती है। लेकिन यहाँ भी बात स्पष्ट है — पुस्तक, समीक्षा या परिभाषा के बारे में जानकारी कभी पर्याप्त नहीं होती। सच्चा अध्ययन तभी होता है जब प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में स्वाध्याय को जागृत करता है। थियोसोफिकल सोसाइटी हमें कहे से अनकहे की ओर ले जाती है। शब्दों से परे अंतःकरण में प्रकट होने वाला सहज ज्ञान ही सच्चा प्रवेश द्वार है।

मैडम ब्लावत्स्की के सिद्धांत — आत्म—साक्षात्कार — को समझने की भी यही कुंजी है। केवल दूसरों का अनुसरण करके या उनकी छाया में चलकर कोई इसमें प्रवेश नहीं कर सकता। इसके लिए स्वतंत्र अन्वेषण, ईमानदार प्रयास और आंतरिक दृढ़ संकल्प आवश्यक है। जब मनुष्य अपने भीतर झाँकता है, तभी रहस्य प्रकट होते हैं और जीवन का दिव्य आयाम प्रकाशित होता है।

थियोसोफिकल सोसाइटी का सच्चा मर्म सभी को आत्म—साक्षात्कार की ओर प्रेरित करना है — जहाँ ज्ञान, पाठ, चर्चा और परिभाषा एक दिन पीछे छूट जाते हैं और बोध, जीवंतता और दिव्य स्पर्श सामने आते हैं। यही इसका सच्चा धर्म है, यही इसका उद्देश्य है, और शायद यही इसके सदस्यों के लिए जीवन का एकमात्र मंत्र होना चाहिए।

गुप्त सिद्धांत — शाश्वत सत्य की ओर एक यात्रा और मैंने जो आत्मसात किया जब मैंने पहली बार मैडम हेलेना पेत्रोव्ना ब्लावात्स्की द्वारा लिखित गुप्त सिद्धांत पढ़ा, तो मैं केवल एक पुस्तक से नहीं मिली मुझे ऐसा लगा जैसे मैं ज्ञान की एक विशाल और शाश्वत धारा में प्रवेश कर गई हूँ। 1888 में प्रकाशित यह महान कृति केवल विचारों का संकलन ही नहीं, बल्कि दर्शन, धर्म और विज्ञान का एक संश्लेषण है, जिसकी जड़ें उस कालातीत परंपरा में हैं जिसे ब्लावात्स्की ने प्राचीन ज्ञान कहा था। मेरे लिए, यह जल्दबाजी में पढ़ी जाने वाली पुस्तक नहीं, बल्कि एक जीवंत सिद्धांत है जो समझ बढ़ाने के साथ—साथ निरंतर प्रकट होता रहता है।

अपने मूल में, गुप्त सिद्धांत तीन मूलभूत प्रस्तावों पर आधारित है। पहला, यह एक निरपेक्ष, असीम और अपरिवर्तनीय सिद्धांत के अस्तित्व की पुष्टि करता है — एक शाश्वत वास्तविकता जो रूप और अभिव्यक्ति से परे है। दूसरा, यह आवर्तिता के नियम, अभिव्यक्ति, विलय और नवीनीकरण के लयबद्ध चक्रों का वर्णन करता है जो ब्रह्मांड और उसमें विद्यमान समस्त जीवन को

आकार देते हैं। तीसरा, यह समस्त अस्तित्व की एकता की घोषणा करता है, यह सिखाता है कि प्रत्येक प्राणी, सूक्ष्मतम परमाणु से लेकर सर्वोच्च आध्यात्मिक बुद्धि तक, एक सार्वभौमिक जीवन में गुंथे हुए हैं।

जब मैं इन सिद्धांतों पर चिंतन करता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि ये केवल तत्त्वमीमांसा तक सीमित अमूर्त विचार नहीं हैं ये मानव अस्तित्व के मूल को छूते हैं। एक शाश्वत सत्य का विचार, जो छिपा हुआ होते हुए भी सर्वव्यापी है, सीधे मेरी अपनी आंतरिक खोज से जुड़ता है। चिंतन के मौन में, मैं अक्सर उसी असीम वास्तविकता को अपने भीतर फुसफुसाते हुए महसूस करता हूँ। जीवन, अपने सभी संघर्षों, आनंदों और रहस्यों के साथ, उस शाश्वत आधार का प्रतिबिंब प्रतीत होता है जिसे ब्लावात्स्की अस्तित्व का मूल कहते हैं। द सीक्रेट डॉक्ट्रिन में ब्लावात्स्की का दृष्टिकोण कल्पनाशील दर्शन की नकल की। उन्होंने विज्ञान, धर्म और दर्शन के खंडित मार्गों को एक सामंजस्यपूर्ण समग्रता में समेटने का साहसपूर्वक प्रयास किया। उन्होंने प्राचीन पूर्वी ग्रंथों, वैदिक स्तोत्रों, बौद्ध शिक्षाओं और गूढ़ परंपराओं का सहारा लेकर हमें याद दिलाया कि मानवता हमेशा अपने भीतर सत्य की स्मृति रखती है। उनके लेखन में जो नया दिखाई देता है, वह वास्तव में किसी अत्यंत पुरानी चीज का स्मरण है, कुछ ऐसा जो हर सच्चे साधक के हृदय में गूंजता है।

जैसा कि मैं समझता हूँ, इस पुस्तक का केंद्रीय आदर्श यह है कि ब्रह्मांड कोई आकस्मिक दुर्घटना नहीं बल्कि एक बुद्धिमान, उद्देश्यपूर्ण प्रकटीकरण है। मानवता इस ब्रह्मांड में अजनबी नहीं बल्कि इसकी भव्य रचना में भागीदार है। प्रत्येक आत्मा, जन्म और पुनर्जन्म के चक्रों से गुजरते हुए, विकास की यात्रा पर है केवल जैविक बल्कि आध्यात्मिक भी। इसका उद्देश्य केवल जीवित रहना ही नहीं, बल्कि जागृति भी है अपने दिव्य सार की खोज करना और सचेतन रूप से शाश्वत स्रोत के साथ एकाकार होना।

जब मैं इन विचारों पर मनन करता हूँ, तो मुझे अक्सर लगता है कि द सीक्रेट डॉक्ट्रिन मेरी शelf पर पड़ा कोई बाहरी ग्रंथ नहीं है यह मेरे अपने अस्तित्व में अंकित एक गुप्त शास्त्र है। प्रत्येक मनुष्य अपने भीतर एक गुप्त सिद्धांत रखता है, एक मौन साथी जो आत्मा को सत्य की ओर ले जाता है। यह हमारे अंतर्ज्ञान में, अचानक स्पष्टता के क्षणों में, प्रकृति और दूसरों के साथ हमारे द्वारा महसूस किए जाने वाले अंतर्संबंध की गहरी भावना में मौजूद है। यह आंतरिक सिद्धांत शब्दों में नहीं, बल्कि अनुभवों में, जागरूकता के सूक्ष्म प्रकटीकरण में बोलता है।

ब्लावात्स्की ने पाठकों से आग्रह किया कि वे उनकी शिक्षाओं को

आँख मूँदकर स्वीकार न करें, बल्कि तर्क और आंतरिक बोध के माध्यम से उनका परीक्षण करें। मेरा भी मानना है कि सत्य कोई ऐसी चीज नहीं है जो केवल पुस्तकों से विरासत में मिल सकती है। पुस्तकें दीपक का काम कर सकती हैं, लेकिन प्रकाश भीतर प्रज्वलित होना चाहिए। मेरे लिए, शाश्वत यात्रा सिद्धांतों को संचित करने के बारे में नहीं, बल्कि मेरे जीवन में पहले से ही सांस ले रहे गुप्त ज्ञान को जगाने के बारे में है। गुप्त सिद्धांत तभी सार्थक होता है जब वह विचारों का एक समूह न रहकर एक जीवंत मार्ग बन जाता है जब एकता, शाश्वतता और सत्य की उसकी दृष्टि दैनिक अनुभव में साकार होती है।

ब्लावात्स्की के कार्यों में जिस चीज की मैं सबसे अधिक प्रशंसा करता हूँ, वह है हठधर्मिता को चुनौती देने का उनका साहस। उन्होंने कठोर विज्ञान की सीमाओं, रूढ़िवादी धर्म की संकीर्णता और सतही दर्शन की आत्मसंतुष्टि को उजागर करने में कोई संकोच नहीं किया। उन्होंने मानवता को याद दिलाया कि सत्य को संस्थाओं या पंथों में सीमित नहीं किया जा सकता है यह अनंत, स्वतंत्र और सार्वभौमिक है। यह बात आज भी मेरे मन में गूंजती है, क्योंकि मैं भी मानती हूँ कि आध्यात्मिक मार्ग किसी संप्रदाय से जुड़ने के बारे में नहीं, बल्कि जीवन के शाश्वत रहस्य के प्रति जागृति के बारे में है।

अंततः द सीक्रेट डॉक्ट्रिन कोई निष्कर्ष नहीं, बल्कि एक शुरुआत है। यह तैयार उत्तर नहीं देती यह मन को उद्वेलित करती है, अंतर्ज्ञान को जागृत करती है, और साधक को गहराई से देखने के लिए बाध्य करती है। मेरे लिए, यह पुस्तक एक दर्पण की तरह है कभी अस्पष्ट, कभी दीप्तिमान जो मानव आत्मा की शाश्वत खोज को प्रतिबिम्बित करती है। और शायद यही इसका सबसे बड़ा उपहार है यह हमें केवल शाश्वतता के बारे में ही नहीं सिखाती, बल्कि हमें अपने भीतर शाश्वतता का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करती है। इस प्रकार, द सीक्रेट डॉक्ट्रिन के साथ मेरी यात्रा जारी है। यह मौन की, विस्मय की, इस अनुभूति की यात्रा है कि यह गुप्त सिद्धांत केवल ब्लावात्स्की का नहीं है यह मानवता का है। यह मेरा है। यह आपका है। यह शाश्वत सत्य है जो हर हृदय में धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहा है।

मैंने ऊपर जो कुछ भी कहा है, वह पूरी तरह से मेरी अपनी धारणा, सोच और समझ है। पाठक, विशेषकर जो अत्यधिक अनुभवी और वरिष्ठ हैं, अपनी सुविधानुसार मेरा मार्गदर्शन कर सकते हैं। सभी को गुरु का आशीर्वाद और प्रेरणा प्राप्त हो!

न्यूज और नोट्स

बंगाल

बंगाल थिऑसिफिकल फेडरेशन की 105वीं एनिवर्सरी, बंगाल थिऑसिफिकल सोसाइटी की 143वीं एनिवर्सरी और थिऑसिफिकल ऑर्डर ऑफ सर्विस की 52वीं एनिवर्सरी 14 सितंबर 2025 को हॉल में लंच ब्रेक के साथ पूरे दिन के प्रोग्राम के साथ हुई। सुबह के सेशन में सभी 03 सेक्सशन में नई एग्जीक्यूटिव कमेटियां बनाई गईं। श्री गौतम डे (आई एफ एस – पूर्व डायरेक्टर), वेन. कचयेन वांते, श्री शैलेंद्र नाथ दत्ता को क्रमशः बी टी,फ, बीटीएस और टीओएस का प्रेसिडेंट चुना गया। श्री अचिंत्य नारायण चक्रवर्ती, श्रीमती मधुश्री चौधरी और श्री सत्रजीत चक्रवर्ती को क्रमशः बी टी,फ, बीटीएस और टीओएस का सेक्रेटरी चुना गया। नए मेंबर्स को डिप्लोमा दिए गए। अलग-अलग लॉज के सेक्रेटरी और मेंबर्स मीटिंग में शामिल हुए। श्री अचिंत्य नारायण चक्रवर्ती, सेक्रेटरी ने फेडरेशन के फ्यूचर प्लान के बारे में बात की, जैसे कि एक चौरिटेबल होम्योपैथिक डिस्पेंसरी खोलना, गरीब स्टूडेंट्स को फ्री ट्यूशन वगैरह, इसके अलावा दूसरे प्रोजेक्ट्स भी। श्रीमती मधुश्री चौधरी, सेक्रेटरी ने बीटीफ का हिस्टोरिकल बैकग्राउंड बताया। श्री शैलेंद्र नाथ दत्ता, प्रेसिडेंट, टीओएस ने मेंबर्स से अपील की कि वे कुछ कम्युनिटी सर्विस प्रोजेक्ट करने के लिए दिल खोलकर डोनेट करें। दोपहर के सेशन में एनुअल कॉन्फ्रेंस हुई जिसमें कटक से नेशनल लेक्चरर प्रो. पार्थ सारथी पीडी सारंगी चीफ गेस्ट थे और वेन, बुद्धरक्षित महाथेरो, जाने-माने मेडिटेशन ट्रेनर गेस्ट ऑफ ऑनर थे। कॉन्फ्रेंस की थीम थी “बदलती दुनिया में थियोसोफी”। कॉन्फ्रेंस की शुरुआत श्रीमती जयश्री दास द्वारा कंडक्ट की गई सभी धर्मों की प्रार्थनाओं से हुई। चीफ गेस्ट, प्रो. सारंगी ने अपनी स्पीच में बाहरी फिजिकल दुनिया और अंदरूनी मेंटल दुनिया के बीच के अंतर – मैटर और माइंड के रिलेशन के बारे में बताया। वेन. बुद्धरक्षित ने हमारी स्ट्रेसफुल लाइफ में मन की शांति पाने के लिए मेडिटेशन के फायदे के बारे में बात की। श्री गौतम डे, वेन. कचयेन वान्टे, श्रीमती जाबा गुहाठाकुरता, श्री दिप्तेंदु चौधरी ने भी कॉन्फ्रेंस की थीम पर अपने विचार रखे। मीटिंग श्री अविक गुहा ठाकुरता के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ खत्म हुई।

दिल्ली

दिल्ली फेडरेशन ने सितंबर 2025 के महीने में ये लेक्चर ऑर्गनाइज किए— नेशनल लेक्चरर बन्धु एस.के. पांडे ने 6 सितंबर को एक ऑनलाइन टॉक दी जिसमें उन्होंने ‘यूनिवर्सल ब्रदरहुड – लॉ ऑफ एसेंशियल यूनिटी’ के बारे में बात की। नेशनल लेक्चरर बन्धु राजीव गुप्ता ने 13 और 27 सितंबर को हुई फेडरेशन की फिजिकल मीटिंग में ‘द सोलर सिस्टम बाय ए ई-पॉवेल’ के बारे में बात की। बन्धु एन.एन. 20 सितंबर को राउत की ऑनलाइन बातचीत का टॉपिक था ‘थियोसोफी को आम आदमी तक ले जाना’। यू ट्यूब थियोसोफी दिल्ली पर लिए गए पब्लिक लेक्चर के लिए लिंक— 1. यू ट्यूब चैनल – थिऑसिफिकल फेडरेशन दिल्ली 2.12 सब्सक्राइबर और 284,652 व्यूज और 191 वीडियो। इस साल 2025 सितंबर तक, डेलही फेडरेशन ने थियोसोफी के प्रचार के लिए ऑनलाइन एक्टिविटीज बढ़ा दी हैं। थियोसोफी पर किताबें और कुछ ऑनलाइन रिकॉर्ड किए गए लेक्चर ऑफिशियली इसके तहत शामिल किए गए हैं। ये ऑनलाइन प्लेटफॉर्म शंकर लॉज की सदस्य डॉ. मानसी भगत द्वारा थियोसोफी के प्रचार के लिए 2021 से चलाए जा रहे थे, दो प्लेटफॉर्म यू ट्यूब और इंस्टाग्राम थियोसोफी पर वीडियो, शॉर्ट्स, रील और कोटेशन बना रहे थे। 2. यू ट्यूब चैनल – ऑडियोबुक थियोसोफी

www-youtube-com/@Subaudiobookstheosophy

, 22 वीडियो, 5

ऑडियोबुक रिलीज हुई, 392 सब्सक्राइबर और 11,657 व्यूज मिले।

3. इंस्टाग्राम चैनल – पर्स ऑफ विजडम 363 पोस्ट, 2066 सब्सक्राइबर और 2.0 हजार मंथली व्यूज।

गुजरात

13 सितंबर को हुई भावनगर लॉज की मीटिंग में लॉज के सेक्रेटरी बन्धु. हरेश जोशी ने अगस्त के आखिरी सप्ताह में कनाडा में हुई 12वीं वर्ल्ड कांग्रेस में मिले अपने काम के अनुभव के बारे में बताया।

3 गुजरात गर्ल्स बी.टी.एन. के कमांडर कर्नल वैभव आर. दीक्षित ने 27 सितंबर को भावनगर लॉज के मेंबर्स को एड्रेस किया और ‘सेवा परमो धर्म’ के बारे में बात की। कुशीनगर लॉज के मेंबर्स भी ऊपर बतायी गई दोनों मीटिंग्स में

शामिल हुए।

तमिल

जुलाई से सितंबर 2025 के बीच इस लॉज ने रेगुलरली मीटिंग्स कीं—

धर्मपुरी, नागरकोइल, पुडुचेरी कोराडाचेरी और गोविंदारेड्डीपलायम के गोविंदर। वसंतम लॉज, सथुवाचारी (वी एल आर) ने हर महीने हर दो हफ्ते में मीटिंग कीं। वेल्लोर के राजा लॉज और लोटस लॉज ने हर महीने हर हफ्ते मीटिंग की, और तिरुचिरापल्ली लॉज की सालाना जनरल बॉडी मीटिंग 29.5. 2025 को हुई।

स्टडी कैंप—

13 से 14 सितंबर 2025 तक सेलम में एक स्टडी कैंप लगाया गया। कैंप की थीम थी 'ईगो और थियोसोफी का खात्मा'। फेडरेशन के प्रेसिडेंट बन्धु आर. कृष्णमूर्ति ने फंक्शन की अध्यक्षता की। दोनों दिन तमिल फेडरेशन की वाइस—प्रेसिडेंट बहन एम. विजयलक्ष्मी ने भारत समाज पूजा की। प्रेसिडेंट बन्धु आर. कृष्णमूर्ति ने 13 सितंबर को अपने उद्घाटन भाषण में इस थीम पर एक अच्छी बात कही। बन्धु. तमिल फेडरेशन के सेक्रेटरी पी. देवराजन ने अपनी शुरुआती स्पीच में हर लॉज से उन्होंने ऑडियंस को कुछ आसान योग एक्सरसाइज भी सिखाई। मीटिंग में धर्मपुरी लॉज के बन्धु सी. चंद्रशेखरन और नागरकोइल लॉज के बन्धु पी. मुरुगावेल को इंडियन सेक्शन काउंसिल के मेंबर के तौर पर चुनने को मंजूरी दी गई। छोटी बातचीत के सेशन में राजा लॉज, वेल्लोर के बन्धु एस. मुनिवेलन ने 'ईगो और स्परिचुअलिटी' के बारे में बताया, वसंतम लॉज के बन्धु पी. पुरुषोत्तमन ने 'स्परिचुअल लाइफ' पर बात की, और मदुरै के बन्धु के. सासकरण की बात का सब्जेक्ट 'जे. कृष्णमूर्ति' था। इसके अलावा, चार मेंबर थे, यानी पुडुचेरी लॉज के बन्धु जी. बालू, उस्सूर लॉज के बन्धु आर. कुप्पुसामी, वेल्लोर के लोटस लॉज के बन्धु. एम. नरसिम्हन और कृष्णगिरी लॉज के बन्धु आर. प्रथबन ने 'थियोसोफी के माध्यम से ईगो को हटाना' टॉपिक पर बात की। इसके अलावा, सेलम की बहन एम. विजयलक्ष्मी और धर्मपुरी लॉज के बन्धु सी. चंद्रशेखरन ने वैकूवर, कनाडा में थिऑसिफिकल सोसाइटी की 12वीं वर्ल्ड कांग्रेस में अपने अनुभव शेयर किए, जो 23 से 27 जुलाई 2025 तक हुई थी। फेडरेशन के प्रेसिडेंट बन्धु आर. कृष्णमूर्ति और सेक्रेटरी बन्धु एल. पी. देवराजन 14 सितंबर 2025 को लोटस लॉज वेल्लोर

आए। स्टडी कैंप में तमिलनाडु और पुडुचेरी के 15 लॉज के 101 मेंबर शामिल हुए। यह 14 सितंबर 2025 को फेडरेशन के सेक्रेटरी बन्धु पी. देवराजन के धन्यवाद प्रस्ताव के बाद खत्म हुआ। दूसरी एक्टिविटीज बहन धर्मपुरी लॉज के देसी धर्मलिंगम ने हर महीने अलग—अलग तारीखों पर सरकारी हेडक्वार्टर हॉस्पिटल, धर्मपुरी में मरीजों के अटेंडेंट को मुफ्त नाश्ता दिया, जिस पर रु 42,000— खर्च हुए।

फेडरेशन सेक्रेटरी बन्धु पी— देवराजन ने अपने बन्धु पी— थंगावेल के साथ मिलकर 11—9—2025 को अपनी मां की महालय प्रस्थान तिथि के मौके पर श्री धनदायुथापानी मंदिर में 100 लोगों को खाना खिलाया।

यू.पी. और उत्तराखंड

धर्म लॉज, लखनऊ की एनुअल जनरल मीटिंग (एगीएम) 3 सितंबर को हुई। इसके अलावा, सितंबर में बन्धु यू.एस. पांडे ने वहां तीन टॉक दिए और उनके टॉक के टॉपिक थे— 'हेवनली मैन' (10 सितंबर को), 'प्लान ऑफ इवोल्यूशन और जीवन के उद्देश्य' (17 सितंबर को) और 'शंबाला' (24 सितंबर को)। बहन वसुमती ने 14 और 28 सितंबर को प्रज्ञा लॉज में 'आत्मिक संकल्प शक्ति का विकास' टॉपिक पर टॉक और डिस्कशन किया। बन्धु वी.के. श्रीवास्तव ने 4 सितंबर को आगरा के निर्वाण लॉज में 'सनातन धर्म' के बारे में बात की। बन्धु देवेन्द्र बाजपेयी ने 11 सितंबर को 'श्री कृष्ण' पर बात की और डॉ. आर.एस. ओझा ने 18 सितंबर को 'प्राणायाम' समझाया। फिर, लॉज की एच.पी.बी. 25 सितंबर को हुई। बन्धु अरविंद राय ने 3 और 10 सितंबर को गोरखपुर के सर्वहितकारी लॉज में 'पहली दीक्षा' और 'मानसिक शरीर' टॉपिक पर दो बातचीत की। बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा ने 17 सितंबर को 'त्रिकाय' समझाया और बन्धु एल.एस. शुक्ला ने 24 सितंबर को 'नवरत्न' के बारे में बात की। बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा ने 14 सितंबर को सनातन धर्म लॉज में 'मृत्यु के बाद का जीवन' टॉपिक पर बात की। बन्धु 19 सितंबर को जिगना — ब्रह्मविद्या लॉज में वशिष्ठ मुनि त्रिपाठी ने 'मृत्यु के बाद' के बारे में बात की।

7 सितंबर को कानपुर के चौहान लॉज में 'द की टू थियोसोफी' किताब की स्टडी हुई।

बन्धु शिवबरन सिंह ने 'बुद्ध की शिक्षाओं' के बारे में बताया।

इसके अलावा, 14 और 21 सितंबर को वहां 'यूनिवर्सल ब्रदरहुड – ए कॉन्सेप्ट ऑफ रियलिटी' टॉपिक पर एक सेमिनार हुआ।

7 सितंबर को नोएडा के लॉज में 'विवेक चूड़ामणि' किताब की स्टडी हुई।

इसके अलावा, 21 सितंबर को वहां 'मनुष्य के पितृ, बहराइशद और अग्निश्वत्त और पितृ-पक्ष का महत्व' थीम पर एक ग्रुप डिस्कशन हुआ।

21 सितंबर को ग्रेटर नोएडा के मैत्रेय लॉज में एनी बेसेंट की किताब 'पेन-इट्स मीनिंग एंड यूज' पर सिस्टर इंदु सूद ने ग्रुप स्टडी और डिस्कशन को आसान बनाया। बहन कृतिका गोयल और बहन सुव्रलीना मोहंती ने 7 और 14 सितंबर को प्रयास लॉज, गाजियाबाद में 'द वॉइस ऑफ द साइलेंस' और 'द हिडन साइड ऑफ लॉज मीटिंग्स' पर बातचीत की। बन्धु सुदीप मिश्रा ने 21 सितंबर को आनंद लॉज, प्रयागराज में 'थियोसोफी एक्सप्लेंड इन क्वेश्चन एंड आंसर्स' किताब की पढ़ाई करवाई। बन्धु यू.एस. पांडे ने 26 सितंबर को वाराणसी में काशी तत्व सभा के तहत 'महात्मा लेटर्स एंड देयर टीचिंग्स' पर बातचीत की। वाराणसी में एनी बेसेंट लॉज ने 15 सितंबर को एक सेशन ऑर्गनाइज किया जिसका टॉपिक था 'थिऑसिफिकल एक्टिविटीज के बारे में ओपन डिस्कशन'। पब्लिक बातचीत— बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा ने 17 सितंबर को गोरखपुर में रिटायर्ड इंजीनियर्स एसोसिएशन की मीटिंग में 'ब्रह्मा ही विश्वकर्मा हैं' के बारे में बात की। फिर, उन्होंने 25 सितंबर को सेवा स्परिचुअल लेडीज क्लब में 'शिव और शक्ति' के बारे में बताया।

फेडरेशन सेक्रेटरी बन्धु पी— देवराजन ने अपने बन्धु पी— थंगावेल के साथ मिलकर 11-9-2025 को अपनी मां की महालया तिथि के मौके पर श्री धनदायुथापानी मंदिर में 100 लोगों को खाना खिलाया। यू.पी. और उत्तराखंड धर्म लॉज, लखनऊ की एनुअल जनरल मीटिंग (AGM) 3 सितंबर को हुई। इसके अलावा, सितंबर में बन्धु यू.एस. पांडे ने वहां तीन टॉक दिए और उनके टॉक के टॉपिक थे 'हेवनली मैन' (10 सितंबर को), 'प्लान इवोल्यूशन और जीवन का मकसद' (17 सितंबर को) और 'शंबाला' (24 सितंबर को)। बहन वसुमती ने 14 और 28 सितंबर को प्रज्ञा लॉज में 'आत्मिक संकल्प शक्ति का विकास' टॉपिक पर टॉक और डिस्कशन किया। बन्धु वी.के. श्रीवास्तव ने 4 सितंबर को आगरा के निर्वाण लॉज में 'सनातन धर्म' के बारे में बात की। बन्धु

देवेन्द्र बाजपेयी ने 11 सितंबर को 'श्री कृष्ण' पर बात की और डॉ. आर.एस. ओझा ने 18 सितंबर को 'प्राणायाम' समझाया। फिर, लॉज की। 25 सितंबर को हुई। बन्धु अरविंद राय ने 3 और 10 सितंबर को गोरखपुर के सर्वहितकारी लॉज में 'पहली दीक्षा' और 'मानसिक शरीर' टॉपिक पर दो बातचीत की। बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा ने 17 सितंबर को 'त्रिकाय' समझाया और बन्धु एल.एस. शुक्ला ने 24 सितंबर को 'नवरत्न' के बारे में बात की। बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा ने 14 सितंबर को सनातन धर्म लॉज में 'मृत्यु के बाद का जीवन' टॉपिक पर बात की। बन्धु 19 सितंबर को जिगनों ब्रह्मविद्या लॉज में वशिष्ठ मुनि त्रिपाठी ने 'मृत्यु के बाद' के बारे में बात की।

इसके अलावा, 14 और 21 सितंबर को वहां 'यूनिवर्सल ब्रदरहुड – ए कॉन्सेप्ट ऑफ रियलिटी' टॉपिक पर एक सेमिनार हुआ।

7 सितंबर को नोएडा के लॉज में 'विवेक चूड़ामणि' किताब की स्टडी हुई।

इसके अलावा, 21 सितंबर को वहां 'मनुष्य के पितृ, बहराइशद और अग्निश्वत्त और पितृ-पक्ष का महत्व' थीम पर एक ग्रुप डिस्कशन हुआ।

21 सितंबर को ग्रेटर नोएडा के मैत्रेय लॉज में एनी बेसेंट की किताब 'पेन-इट्स मीनिंग एंड यूज' पर सिस्टर इंदु सूद ने ग्रुप स्टडी और डिस्कशन को आसान बनाया। बहन कृतिका गोयल और बहन सुव्रलीना मोहंती ने 7 और 14 सितंबर को प्रयास लॉज, गाजियाबाद में 'द वॉइस ऑफ द साइलेंस' और 'द हिडन साइड ऑफ लॉज मीटिंग्स' पर बातचीत की। बन्धु सुदीप मिश्रा ने 21 सितंबर को आनंद लॉज, प्रयागराज में 'थियोसोफी एक्सप्लेंड इन क्वेश्चन एंड आंसर्स' किताब की पढ़ाई करवाई। बन्धु यू.एस. पांडे ने 26 सितंबर को वाराणसी में काशी तत्व सभा के तहत 'महात्मा लेटर्स एंड देयर टीचिंग्स' पर बातचीत की। वाराणसी में एनी बेसेंट लॉज ने 15 सितंबर को एक सेशन ऑर्गनाइज किया जिसका टॉपिक था 'थिऑसिफिकल एक्टिविटीज के बारे में ओपन डिस्कशन'। पब्लिक बातचीतरू बन्धु एस.बी.आर. मिश्रा ने 17 सितंबर को गोरखपुर में रिटायर्ड इंजीनियर्स एसोसिएशन की मीटिंग में 'ब्रह्मा ही विश्वकर्मा हैं' के बारे में बात की। फिर, उन्होंने 25 सितंबर को सेवा स्परिचुअल लेडीज क्लब में 'शिव और शक्ति' के बारे में बताया।

स्टूडेंट्स / टीचर्स / युवाओं के लिए संबोधन

बहन विभा सक्सेना ने 12 सितंबर को वाराणसी के वसंत कन्या महाविद्यालय के स्टूडेंट्स को 'थियोसोफी के प्रिंसिपल्स को समझना' इंट्रोडक्शन के बारे में बताया।

दूसरे फेडरेशन में योगदान बन्धु एस.के. पांडे की 'यूनिवर्सल ब्रदरहुड – लॉ ऑफ एसेंशियल यूनिटी' टॉपिक पर ऑनलाइन टॉक 6 सितंबर को दिल्ली फेडरेशन के तहत हुई।

बन्धु शिखर अग्निहोत्री ने 'जिंदगी में निराशाओं को कैसे हैंडल करें' पर चर्चा की। इसे अड्यार लॉज, मद्रास ने 14 सितंबर को ऑर्गनाइज किया था।

बहन सुव्रलीना मोहंती ने 'थॉट पावर, कंट्रोल एंड कल्चर' पर एक टॉक दी जो 21 सितंबर को पुणे लॉज ने प्रस्तुत की।

इंडियन सेक्शन प्रोग्राम में योगदान बहन विभा सक्सेना ने एसबी अपेंडिक्स II के पार्ट 4 और

महात्मा लेटर्स टू ए.पी. सिनेट' की ऑनलाइन स्टडी की। यह स्टडी

5 सितंबर को की गई थी।

टी.एस. फिलीपींस— भगवद गीता की ऑनलाइन स्टडी

बहन विभा सक्सेना ने क्रमशः 3, 10 और 24 सितंबर को कराई।

f

